।।ॐ श्री विश्वेश्वराय नमः।।

।।ॐ श्री रामलाल प्रभवे नमः।।   ।।ॐ श्री चन्द्रमोहन गुरवे नमः।।

श्री गुरुदेव भगवान के प्रमुख गुरु भाई बहनों का संक्षिप्त परिचय

प्रकाशक

प्रभुरामलाल योग साधना भवन, ६१/सी/१/१२१ जोंधवल
(छुहारा हनुमान जी रोड), मेंहदौरी कालोनी, तेलियरगंज
प्रयागराज-२११००४
मो० : ९९३६६७८३६८, ७३७६६९१७५८

सहयोग राशि रुपये २०/- मात्र

प्रकाशक

प्रभुरामलाल योग साधना भवन, ६१/सी/१/१२१ जोंधवल
(छुहारा हनुमान जी रोड), मेंहदौरी कालोनी, तेलियरगंज
प्रयागराज-२११००४
मो० : ९९३६६७८३६८, ७३७६६९१७५८

अक्षर संयोजन :
महेन्द्र श्रीवास्तव
मो० : ९७९४१६०३४०, ९४५२२४८४३४

मुद्रक :
महाप्रभु श्री रामलाल प्रिन्टर्स
प्रयागराज

दो शब्द

सिद्धयोग परिवार से जुड़े बहुत से ऐसे परम् भाग्यशाली लोग होंगे जिन्हें परम गुरू अनन्त ज्योति योग योगेश्वर महाप्रभु श्री राम लाल जी महाराज का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ होगा, बहुत से ऐसे भाग्यशाली लोग होंगे जिन्हें हमारे आप के प्राण-धन सद्‌गुरू देव श्री चन्द्र मोहन जी महाराज के प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ मिला होगा और बहुत से ऐसे भाई-बहन होंगे जिन्हें हमारे गुरूदेव भगवान के गुरू-भाई बहनों के भी प्रत्यक्ष दर्शन हुए होंगे। इस सिद्धयोग परिवार से बाद में जुड़े लोगों को परम गुरू श्री राम लाल जी महाराज एवं सद्‌गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के स्वरूप के दर्शन तो मिल ही रहे हैं, परन्तु बहुत से ऐसे लोग होगें जो सद्‌गुरू भगवान के गुरू-भाई-बहनों के स्वरूप से भी अनभिज्ञ होंगे कि वे कैसे थे? ऐसे ही भाई-बहनों की जानकारी के लिए गुरूदेव भगवान के कुछ प्रमुख गुरू-भाई-बहनों का संक्षिप्त परिचय एवं उनके दुर्लभ स्वरूप इस छोटी सी पुस्तिका के माध्यम से आप के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। इस पुस्तिका में सद्‌गुरू देव भगवान के उन्हीं गुरू-भाई-बहनों का जिक्र है, जिनका स्वरूप प्राप्त हो सका हैं। प्राप्त दुर्लभ स्वरूपों को इकट्‌ठा करने का काम मिर्जापुर के हमारे वरिष्ठ एवं आदरणीय गुरू भाई श्री दूधनाथ जी ने किया है। गुरूदेव भगवान के इस लाडले बच्चे ने अस्वस्थता की हालत

में भी जो यह अद्भुत कार्य किया है, वह अत्यन्त सरायहनीय हैं।

उन स्वरूपों में एक ऐसा दुर्लभ स्वरूप है जिसे देखते ही बनता है। मिर्जापुर के विण्ढमफाल में स्नान करने के बाद एक पत्थर की शिला पर बैठकर हमारे गुरूदेव भगवान अपने दो शिष्यों को आशीर्वाद दे रहे हैं दाहिने हाथ की ओर केशव दादा एवं बाये हाथ की ओर श्री दशरथ भाई हैं। इन दोनों भाइयों की जवानी की तस्वीरें देखकर हम सब दंग रह जायेंगे। इन सभी स्वरूपों की झाँकी आगामी माघ-मेला शिविर प्रयागराज में हम लोगों को देखने को अवश्य मिलेगी।

प्रकाशक

गुरू परम्परा

गुरू परम्परा के अनुसार अपने नित्यधाम कैलाश पर्वत पर समाधिस्थ अजर अमर सदाशिव महाराज के शिष्य हैं- ''हमारे परम गुरू अनन्य ज्योति योग-योगेश्वर श्री रामलाल जी महाराज।'' इनके विषय में-चेन्नई की काकनाड़ी संहिता में स्पष्ट उल्लेख है कि ये ५१ वर्ष की उम्र में अपना शरीर, त्यागकर ऐसा ही दिव्य स्वरूप बनाकर वे कल्प के अन्त तक हिमालय में विराजमान रहेंगे। आज भी ये हैं ही हैं। कई भाग्यशाली भाइयों ने उनके शरीर त्याग के कई वर्षो बाद भी उनका प्रत्यक्ष दर्शन किया है। परम गुरू श्री राम लाल जी महाराज के लाडले एवं सुयोग्य शिष्य हैं- ''हमारे आप के प्राण-धन सद्‌गुरूदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज।''

एक बार प्रयागराज में माघ-मेला के दरम्यान हमारे गुरू भाई श्री सूरज ने अपने ही एक वरिष्ठ गुरू भाई से कहा कि भाई जी महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज का एक ऐसा अद्‌भुत स्वरूप है जो एक पहाड़ की गुफा में दस हजार वर्षो से भी अधिक समय से समाधिस्थ हैं। प्रत्येक सौ वर्ष में हमारे गुरू देव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज उस स्वरूप में चन्दन का लेप करने जाते हैं। कृपया इसके बारे में गुरूदेव से पूछिए। हमारे उस वरिष्ठ गुरू भाई ने गुरूदेव भगवान से उस स्वरूप के बारे में पूछा। हमारे गुरूदेव भगवान ने उनकी बात सुना तो जरूर परन्तु कोई जबाव नहीं दिया। मेरे भाई-बहन पूरे विश्वास के से कहा जा सकता है कि हमारे परम गुरू महाप्रभु जी एवं गुरू देव भगवान योग-विद्या के स्तम्भ, अनादि सिद्ध एवं सद्‌गुरू तत्व के प्रतिमूर्ति हैं।

एक समय गुरूदेव भगवान के मन मे तीव्र वैराग्य पैदा हुआ और वे जटा बना कर जंगलों में जाने के लिए तैयार हुए। जैसे ही उन्होंने ऋषिकेश आश्रम के मुख्य द्वार से अपना एक कदम बाहर निकाला, उसी समय पोस्ट मैन उन्हें एक पत्र देता है। उसमें लिखा था कि लल्ला! जो कदम तुमने बाहर निकाल लिया है, उसे अन्दर कर लो। मैं गाँव-शहर में विद्यमान हूँ और तुम जंगलों में जा रहे हो। ऐसा विचार छोड़ दो, मुझे तुमसे बहुत काम लेने हैं। यह पत्र उनके गुरूदेव महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज का था। अपने वरिष्ठ शिष्यों के रहते हुए महाप्रभु ने योग्यता के आधार पर गुरूदेव भगवान को ही दीक्षा देने का अधिकार दिया। गुरूदेव भगवान ने अपने गुरूदेव से पूछा कि महाराज। दीक्षा देने से तो पुण्य का १/६ भाग क्षय हो जाता हैं, तो फिर मेरी साधना का क्या हो?

गुरूदेव भगवान के इस प्रश्न के उत्तर में महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज ने कहा- ''लल्ला! तुम्हारी वृन्दावन की साधना काल मे तुम्हें वह अक्षय भण्डार प्रदान किया जा चुका है, चाहे जितने भी लोगों को दीक्षा दो तुम्हारे पुण्य का लेश मात्र भी क्षीण नहीं होगा।'' एक बार एक सन्यासी गुरूदेव भगवान से दीक्षा लेने आया। उन्होंने अपने गुरूदेव से पूछा कि महाराज! क्या मैं सन्यासी को दीक्षा दे सकता हूँ। उन्होंने उत्तर दिया- सन्यासी तो क्या तुम सन्यासी के बाप को भी दीक्षा दे सकते हो। इस प्रकार गुरूदेव भगवान द्वारा दीक्षा देने का कार्य प्रारम्भ हुआ। अब तो इनके अनेक शिष्य हैं जिनके माध्यम से पूरे भारत वर्ष में योग का डंका बज रहा है और निरन्तर सिद्ध योग परिवार का विस्तार हो रहा है।

सद्गुरू देव भगवान के कुछ प्रमुख गुरू भाई-बहनों का संक्षिप्त परिचय

(१) श्री मुलख राजजी महाराज

योगीराज श्री मुलखराज जी महाराज हमारे गुरूदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के बड़े गुरूभाई थे। इनका जन्म लगभग १८८५ सम्वत् में पंजाब प्रान्त, जिला-गुरूदासपुर, तहसील बटाला, ग्राम दलेरपुर में हुआ। वे वर्ण से क्षत्रिय थे। छोटी उम्र में ही वे अपने पिता के साथ अमृतसर आ गये थे। यहीं उनका लालन-पालन हुआ। अमृतसर में उनकी भेंट योग योगेश्वर अनन्त ज्योति श्री रामलाल जी महाराज से हुई और उन्होंने इन्हीं से शिष्यत्व ग्रहण किया। श्री मुलखराज जी अपने गुरूदेव के बड़े ही लाडले शिष्य थे। श्री रामलाल जी महाराज इनको प्यार से राजे कहा करते थे। महाप्रभु जी की इन पर महान कृपा थी। उन्होंने श्री मुलखराज जी को तुरीय अवस्था प्रदान कर रखी थी। वे कई वर्ष तक लगातार तुरीयावस्था में रहे। आठ-आठ महीने तक उनकी आँखें खुलती ही नहीं थी। ये उच्चकोटि के योग निष्ठ योगी थे। इनका जीवन योग-ऐश्वर्य से लबालब भरा हुआ था। अन्त में वे महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज की करूणा-कृपा से परम गति को प्राप्त हुए।

(२) ब्रहमचारी गोपालनन्द जी महाराज

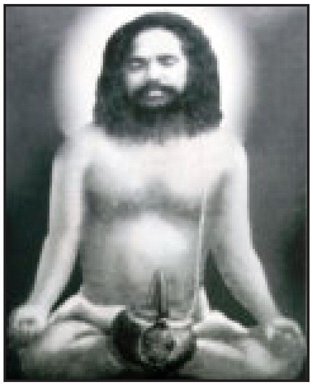

योगीराज ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी महाराज हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के बड़े गुरू भाई थे। ये दोनों योगीराज एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। ब्रहमचारी गोपालनान्द जी का जन्म सम्वत् १९५६ मे हल्द्वानी जिला नैनीताल के एक अग्रवाल वैश्य परिवार में हुआ। इनकी भेंट योग योगेश्वर महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज से सहारनपुर में हुई। यहीं पर उन्होंने महाप्रभु जी से विधिवत् योग-दीक्षा ग्रहण किया। ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज के अत्यन्त कृपा पात्र शिष्य थे। ये अनन्य गुरू-भक्ति से परिपूर्ण थे। महाप्रभु जी की करूणा-कृपा से इनकी ध्यान की स्थिति बहुत ऊँची थी। हम लोग सुबह-शाम आनन्दकन्द श्री प्रभु जी की जो आरती करते हैं, वह आरती ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी की ही देन है। एक बार गो-लोक-धाम में सभी देवी-देवता महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज की आरती कर

रहे थे। ध्यान में उसी आरती को श्री गोपालानन्द जी ने सुना और ध्यान से उठने के बाद उसे लिख लिया। यह दिव्य आरती है, यह किसी की रचना नहीं है। ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी योग शक्ति से सम्पन्न अद्‌भुत योगी थे। इसी योग शक्ति के बल पर किसी अन्य साधक के मन की बात जान जाया करते थे और कभी-कभी उस साधक द्वारा जपने वाला मंत्र भी ले लिया करते थे। उनकी ध्यान की स्थिति इतनी अच्छी थी कि ध्यान में ही वे अनेक सन्त-महात्माओं से उनकी योग शक्ति प्राप्त कर लिया करते थे। ब्रह्मचारी जी का सम्पूर्ण जीवन तपोमय व्यतीत हुआ, उनका रोम-रोम श्री कृष्ण भगवान के प्रेम में विभोर रहा करता था। अन्त में श्री कृष्णमय होकर देवलोक वासी हुए।

✿✿✿

(३) श्री नरसिंहमूर्ति जी महाराज

श्री नरसिंह मूर्ति जी महाराज हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के छोटे गुरू भाई थे। वे एक ग्रहस्थ योगी थे। इनका जन्म आन्ध्र प्रदेश के अन्तर्गत् गोदावरी जिले के मुनगंडा गाँव में सन् १९१४ ई० में हुआ था। बचपन से ही इनकी रूझान अध्यात्म की तरफ थी। बारह वर्ष की अवस्था में ये सद्गुरू की खोज में निकल पड़े। भ्रमण करते-करते वे बद्रीनाथ धाम पहुँचे, वहाँ उनकी भेंट एक अन्तर्दृष्टा महात्मा से हुई। काफी दिनों तक श्री नरसिंहमूर्ति जी उस महात्मा के साथ रहे। महात्मा जी ने एक दिन उनसे कहा-पूर्व जन्म के संस्कार वशात् मेरा-तेरा संस्कार अब पूरा हो चुका है। अब तुम किसी और गुरू के पास जाओ। यह सुनकर वे अत्यन्त अधीर हो गये। महात्मा जी ने उन्हें धीरज बँधाया और कहा चिन्ता मत करो। तुम्हारे असली गुरू ऋषिकेश में विराजमान है और उनका पावन नाम प्रभु श्री रामलाल जी महाराज हैं। महात्मा जी

से आज्ञा लेकर श्री नरसिंहमूर्ति जी तुरन्त ऋषिकेश के लिये चल पड़े।

ढूँढ़ते-तलाशते अन्ततोगत्वा वे योग साधन आश्रम ऋषिकेश पहुँच गये। वहाँ उनका साक्षात्कार महाप्रभु श्री रामलाल ली महाराज से हुआ। यहीं पर उन्होंने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया और वे अपने गुरूदेव के कृपा-भाजन बन गये। महाप्रभु जी की करूणा-कृपा से उन्होंने योग की उच्च्व भूमिकाओं को पा लिया। आन्ध्र प्रदेश में उन्होंने जन-सामान्य को योग का संदेश देकर उपकार ही नहीं किया बल्कि उन्हें कल्याण-पथ का समर्थ राही बना दिया।

✿✿✿

(४) श्री हरिहरानन्द जी महाराज

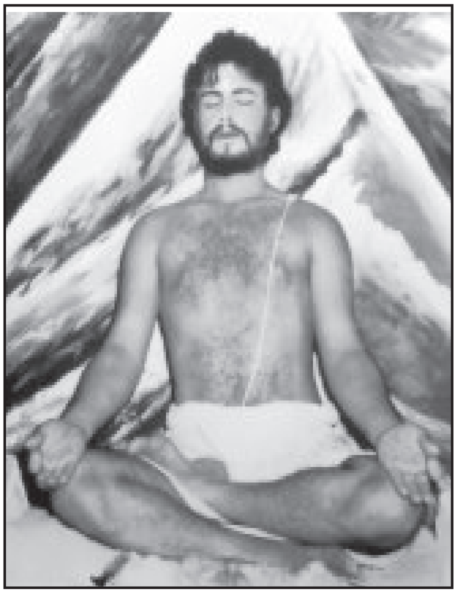

योगीराज श्री हरिहरानन्द जी महाराज हमारे गुरूदेव भगवान के बड़े गुरू भाई हैं। इनका जन्म बलिया जिला (उत्तर प्रदेश) के किसी गाँव में हुआ था। श्री हरिहरानन्द पूर्ण सदाचारी और संयमी व्यक्ति थे। एक बार आनन्दकन्द योग योगेश्वर अनन्त ज्योति महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज अपने भ्रमण काल के दरम्यान श्री हरिहरानन्द जी के गाँव में विराजमान थे। यहीं पर श्री हरिहरानन्द जी की मुलाकात महाप्रभु जी से हुई। इनके एक विलक्षण एवं अद्‌भुत कार्य और आत्म समर्पण भाव को देखकर महाप्रभु जी रीझ गये। उसी क्षण उन्हें हार्द-दीक्षा दे कर तत्व विजयी महासिद्ध बना दिया।

आनन्दकन्द श्री महाप्रभु जी की परम् कृपा पाकर श्री हरिहरानन्द जी का हृदय श्री महाप्रभु जी के प्रतिपूर्ण श्रद्धा और प्रेम से भरा रहने लगा। वे प्रतिपल श्री महाप्रभु जी की चरण सेवा में लगे रहते थे। किसी कार्य के लिए श्री महाप्रभु जी को मुख से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। श्री हरिहरानन्द जी की ध्यान स्थिति इतनी ऊँची थीं कि वे अपनी ध्यान-दृष्टि से देखकर पहले से ही वह वस्तु लेकर श्री महाप्रभु जी के समक्ष उपस्थित हो जाया करते थे जिसकी आवश्यकता उन्हें होती थी। श्री महाप्रभु जी का हृदय उनके इस सेवा-भाव से अत्यन्त प्रसन्न रहता था। कालान्तर में वर-शाप के झमेले से बचाने के लिए आनन्द कन्द श्री महाप्रभु जी ने उन्हें समाज से दूर पहाड़ पर चले जाने की आज्ञा प्रदान कर दी। श्री हरिहरानन्द जी आज भी भगवान सदाशिव के नित्य धाम कैलाशपर्वत के समीप शीशागिरि पहाड़ी पर विद्यमान हैं। वे तीन महीने में एक बार अपनी समाधि से उठते हैं यह स्थान अगम्य हैं वहाँ पर विषैली हवायें चलती हैं। वहाँ पर हर कोई नहीं पहुँच सकता। श्री हरिहरानन्द जी तत्व-विजयी, पूर्ण सिद्ध एवं सर्व समर्थ योगी हैं।

❀❀❀

(५) श्री पारसनाथ जी महाराज

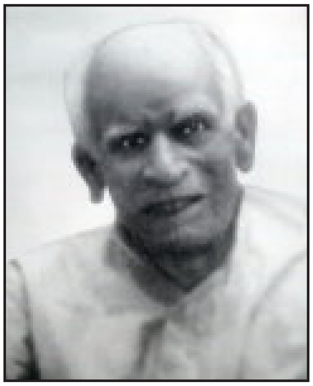

वरिष्ठ गुरू भाइयों से ऐसा सुनने को मिलता है। कि श्री पारसनाथ जी ने हमारे गुरूदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज से पहले अपने गुरूदेव महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज से दीक्षा प्राप्त किया था। इस प्रकार वे हमारे गुरूदेव भगवान के बड़े गुरू भाई हुए। अत: उन्हें चाचा कहकर सम्बोधित करना उचित नहीं है। यद्यपि वे हमारे गुरूदेव भगवान का बहुत सम्मान करते थे। वे कभी हमारे गुरूदेव भगवान के बराबर आसन पर नहीं बैठे बल्कि जमीन पर बैठा करते थे। वे अपने मुखारबिन्दु से प्राय: कहा करते थे कि- ''मैं तो धोखे में रह गया तुम लोग धोखे मे न रहना।'' ''ये वहीं ही हैं''। अर्थात् हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज, महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज के ही दूसरे रूप हैं।

श्री पारसनाथ जी महाराज का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले

के मैरीटार गाँव में हुआ था। वे सद्गुरू की तलाश में काफी दिनों तक इधर-उधर भटकते रहे। अन्ततोगत्वा उनकी भेंट योग योगेश्वर अनन्त ज्योति महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज से ऋषिकेश में हुई। काफी दिनों तक प्रतीक्षा-रत रहने के बाद यहीं पर उनकी दीक्षा हुई। श्री महाप्रभु जी के भ्रमण काल में श्री पारस नाथ जी प्राय: उनके साथ रहे। उनकी ध्यान-स्थिति इतनी अच्छी थी कि वे ध्यान में ही इन्द्र को आदेश देकर वर्षा तक बन्द करा देते थे। श्री महाप्रभु जी की करूणा-कृपा से लोक-लोकन्तर का दर्शन करना उनके लिए सहज था। श्री पारसनाथ जी उच्चकोटि के गृहस्थ संत एवं अदभुत योगी थे।

(६) श्री मुखराम जी महाराज

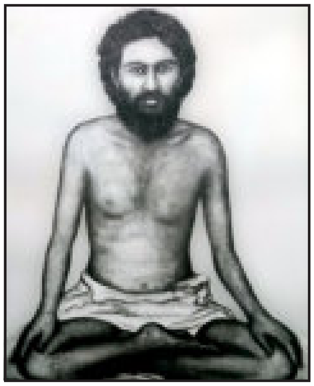

श्री मुखराम जी महाराज हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज के गुरूभाई थे। उनकी जन्म-तिथि एवं जन्म-स्थान के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। आनन्दकन्द महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज अपने प्रभु की खोज में भ्रमण करते हुए वे एक बार आसाम पहुँचे। उस समय इन स्थानों में राजा से लेकर प्रजा तक तन्त्र मंत्र में लिप्त थे। वहाँ पर तांत्रिकों का बोल-बाला था। तांत्रिक अपने निहित स्वार्थों के लिए किसी का अहित करने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। कहने को तो महाप्रभु जी अपने प्रभु जी की खोज में निकले थे परन्तु सच्चाई यह है कि तन्त्र-मन्त्र ऐसी राक्षसी एवं नारकीय साधनाओं में भटके हुए लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए और प्रेत-बाधाओं से पीड़ित लोगों के कल्याण के लिए ही उन स्थानों पर भ्रमण के लिए निकले थे।

श्री मुखराज जी महाराज छाया की तरह हमेशा महाप्रभु जी के साथ रहें। महाप्रभु जी ने मुखराम जी को मिर्जापुर के विन्ध्याचल पर्वत पर स्वरक्षार्थ मंत्र-साधना पहले ही करा चुके थे। इसी साधना के बल पर श्री मुखराम जी ने अनेक तात्रिकों का डटकर मुकाबला किया। वे तांत्रिकों से तनिक भी नहीं डरते थे। जरूरत पड़ने पर वे तांत्रिकों की पिटाई करने एवं उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए तनिक भी संकोच नहीं करते थे। बीहड़ जंगलों में एवं अगम्य स्थानों में भ्रमण-काल के दौरान श्री मुखराम जी हमेशा महाप्रभु जी के साथ रहे। वे महाप्रभु जी के कृपा-पात्र शिष्य थे।

❀❀❀

(७) श्री कृष्णानन्द जी महाराज

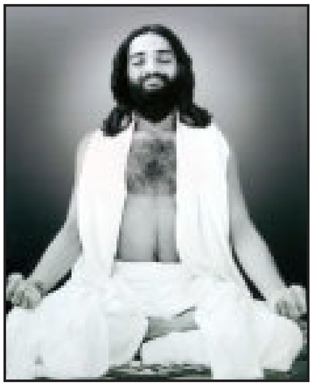

श्री कृष्णानन्द जी महाराज हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द मोहन जी महाराज के गुरू भाई थे। इनकी जन्म-तिथि एवं जन्म स्थान के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। श्री कृष्णाचन्द्र जी, महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज के कृपा-पात्र शिष्य थे। महाप्रभुजी ने श्री कृष्णानन्द जी को मिर्जापुर के विन्ध्याचल पर्वत पर स्वरक्षार्थ मंत्र की अद्‌भुत साधना पहले ही करा चुके थे। बीहड़ जंगलों में भ्रमण-काल के दरम्यान श्री कृष्णानन्द जी हमेशा महाप्रभु जी के साथ रहे और तांत्रिकों को अध्यात्म की सही दिशा प्रदान करने मे अहम् भूमिका निभाई। वैसे सब कुछ कर्ता-धर्ता तो श्री महाप्रभु जी ही रहे परन्तु श्री मुखराज जी एवं श्री कृष्णानन्द जी तांत्रिकों से अपनी स्वरक्षार्थ मन्त्र-साधना के बल पर बराबर मुकाबला करते रहे। श्री कृष्णानन्द जी बहुत गम्भीर और सुलझे हुए साधक थे। जब कभी जल्दबाजी में अपने को मंत्र से अभिमंत्रित किये बिना श्री मुखरामजी तांत्रिकों के जाल में फँस जाते थे तो श्री कृष्णानन्द जी ही उन्हें अपनी योग शक्ति से बचा लिया करते थे। श्री कृष्णानन्द जी अपने गुरूदेव के प्रति पूर्ण श्रद्धावान, समर्पित एवं उच्चकोटि के साधक थे।

(८) महात्माऋषिदेवी जी

महात्मा ऋषि देवी हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज की बड़ी गुरू-बहन थीं। उनका जन्म अमृतसर के एक पवित्र क्षत्रिय कुल में हुआ था। प्रारब्धवश विवाह के थोड़े दिन बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। वे पहले से ही अध्यात्मिक प्रवृत्ति की थीं। उस समय अमृतसर में महाप्रभु श्रीराम लाल जी महाराज के योग ऐश्वर्य की चर्चा जोरों पर थीं। अपने परिवार जनों से आज्ञा लेकर महाप्रभु जी की शरण में गई और उन्हीं से योग दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा के बाद उनकी ध्यान स्थिति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। हर समय ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ उनका साथ देने लगी। महात्मा ऋषिदेवी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि शक्ति सम्पन्ना होते हुए भी उन्होंने कभी किसी को शाप नहीं दिया। ये महात्माओं की तरह बिल्कुल शान्त रहती थीं। किसी पर क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं करती थीं। महाप्रभु जी इन्हें महात्मा कह कर बुलाया करते थे। महात्मा ऋषि देवी जी उच्चकोटि की योगिनी थीं और महाप्रभु जी की शिष्याओं में सबसे बड़ी थीं। महाप्रभु जी की ये विशेष कृपा-पात्र थीं। आज भी अमृतसर में भूषणपुरा में इनके द्वारा स्थापित सती आश्रम है जिसके माध्यम से योग का प्रचार निरन्तर हो रहा है।

✿✿✿

(९) परम् साध्वी माता द्रोपदी देवी जी

माता द्रोपदी देवी जी हमारे गुरूदेव भगवान श्री चन्द्रमोहन जी महाराज की बड़ी गुरू-बहन थीं। ये महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज की परम् योगनिष्ठ शिष्याओं में से एक थीं। इनका जन्म अमृतसर पंजाब में एक पवित्र क्षत्रिय कुल में हुआ था। इनका विवाह छोटी उम्र में ही कर दिया गया था किन्तु विधाता का विधान ऐसा रहा कि इनका सौभाग्य अधिक दिनों तक नहीं रह सका। वे सत्रह-अट्ठारह वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गईं। जगत्आत्मा श्री कृष्ण भगवान के श्री चरणों में इनका स्वाभाविक अनुराग था। एक समय आया जब इनको अमृतसर में ही अनन्त ज्योति परम्गुरू योग योगेश्वर महाप्रभु जी रामलाल जी महाराज के पावन चरण-कमलों की प्राप्ति हुई और उन्होंने महाप्रभु जी से योग दीक्षा ग्रहण की। महाप्रभु जी ने माता द्रोपदी देवी पर तीव्र शक्तिपात किया और उन्हें परम् योगिनी चुड़ात्मा की स्थिति प्रदान कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप इनकी ध्यान स्थिति दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। वे हर समय भगवान श्री कृष्ण जी के चतुर्भुज रूप में सदैव लय रहा करती थीं। महा प्रभु जी उन्हें चतुर्भुजा कह कर पुकारा करते थे। उन्हें ध्यान में ही नहीं बल्कि

खुली आँखों भगवान श्री कृष्ण के दिव्य दर्शन होते रहते थे। यहाँ तक कि वे जब भगवान श्री कृष्ण जी को भोग लगाती थीं, तब भगवान जी प्रत्यक्ष रूप से उनके सामने भोग ग्रहण किया करते थे।

एक बार महाप्रभु श्री की आज्ञा से माता द्रोपदी देवी जी सभी सत् संगियों के सामने थाल में भोजन रखकर आँखें बन्द करके निम्नांकित भजन बोलकर भगवान श्रीकृष्ण जी का भोग हेतु आवाहन किया -

''वैकुण्ठवासी हे प्रभु जी, भोग-लगा-जा-आ-आ-जा।
मैं लिये बैठी हूँ, अपनी थाल में भोजन,
भोग-लगा-जा-आ-जा।।''

ऐसी स्तुति सुनकर भगवान श्रीकृष्ण जी ने एक अद्‌भुत लीला दिखाई सभी सत्‌संगियों के सामने एक एक ग्रास उठकर आकाश में विलीन हो रहा था। माता द्रोपदी जी को तो भगवान् श्री कृष्ण जी का प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा था परन्तु अन्य लोगों को उनके दर्शन नहीं हो रहे थे। अन्त में थोड़ा सा प्रसाद थाली में बचा रह गया। यह दृश्य देखकर सभी लोग आश्‍चर्य चकित रह गये। यह माता-द्रोपदी देवी जी की उत्कृष्ट साधना एवं अद्‌भुत योग शक्ति का जीता-जागता उदाहरण था। माता द्रोपदी देवी जी ने एक योगाश्रम की स्थापना की थी। आज भी उनके आश्रम का वार्षिक उत्सव प्रतिवर्ष उन्नीस-बीस फरवरी को मनाया जाता है।

कुछ अमृत-वचन

(१) गुरूगीता-सार :-

ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम् ।

मंत्रमूलं गुरोवाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

अर्थात् गुरू मूर्ति का ध्यान मुख्य ध्यान है, गुरू चरण की पूजा मुख्य पूजा है, गुरू के मुख से निकला प्रत्येक शब्द मूल मंत्र है और गुरू की कृपा ही मोक्ष का हेतु है।

(२) गीता-सार :-

अनन्याश्चियन्तन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

अर्थात् जो अनन्यप्रेमी भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं, उन नित्य-निरन्तर मेरा चिन्तन करने वाले पुरूषों को योग क्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ।

(३) श्री रामचरित-मानस-सार :-

सरल सुभाव न मन कुटिलाई।

यथालाभ संतोष सदाई।।

अर्थात् सरल स्वभाव हो, मन में किसी प्रकार की कुटिलता न हो और प्रारब्ध पुरूषार्थ के अनुसार जो उपलब्ध हो उसमें सदैव सन्तुष्ट रहना।

(४) योग-दर्शन-सारः -

अथ योगानुशासनम् ।

अर्थात् अनुशासन योग का प्रवेश द्वार है।

(५) जीवन-सार : -

परम् शान्ति।

(६) जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है।

(७) योग के विद्यार्थी को सहनशील, क्षमाशील, विनम्र, सरल, धैर्यवान एवं आत्म विश्वासी होना अति आवश्यक है।

(८) सुख, सुविधा में नहीं बल्कि, सुख,शान्ति में है।

(९) भजन का फल, भजन है। जो भजन के बदले भजन में लाभ देखना चाहते हैं, वे बनियाँ बुद्धि वाले हैं। स्वामी रामकृष्ण परम्हंस उनको पटवारी बुद्धि वाला कहते हैं।

(१०) प्रश्न : -

(i) वह क्या है जो मनुष्य को अपने कार्य पर दृढ़तापूर्वक जमा देता है?

(ii) वह क्या है जिससे मनुष्य निराशा के अन्धकार में भी आशा के प्रकाश की झलक देखता है?

(iii) वह क्या है जो मनुष्य को विपति सहने में धैर्य देता है?

(iv) वह क्या है जो मनुष्य को दुख में भी आनन्द की अनुभूति कराता है?

(v) वह क्या है जो दरिद्रता के पंजे में फँसे हुए मनुष्य को आश्वासन देता रहता है।

(vi) वह क्या है जो लाखों विपत्तियों में घिरे रहने पर भी उसे

धैर्यपूर्वक खड़ा रहने का बल देता है?

उत्तर :- उपरोक्त सभी छ: प्रश्नों का उत्तर मात्र एक है और वह है- दृढ़ सकल्प। दृढ़ संकल्प वह शक्ति है जो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना देती है।

-: शुभकामना :-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे भवन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुखःभागभवेत्।।

प्रार्थना

''चरण छोड़ मैं कहीं न जाऊँ, उमर तेरे चरणों में बिताऊँ।
जीवन का हो विश्राम, गुरू जी तेरे चरणों में।।''

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः